

गैर-मुस्लिमों को सही राह पर आमंत्रित करना (3 का भाग 1): संदेश को यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से फैलाएं

रेटिंग:

विवरण: ?????? ?? ?????? ?????? ?? ?????? ?????????????? ?? ?????? ??? ?? ?????????????? ????????

श्रेणी: [पाठ](#) , [पूजा के कार्य](#) , [वभिन्न अनुशंसित कार्य](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2015 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य:

·दूसरों को इस्लाम की राह पर बुलाने वाले व्यक्तियों की भूमिका को समझना।

अरबी शब्द:

·????? - इस्लामी कानून

·?? - इसका शाब्दिक अर्थ है शाशक, मालिक, स्वामी या सरदार। इस्लामी रूप से इसका इस्तेमाल ज्यादातर अल्लाह के लिए किया जाता है - मालिक, स्वामी, देखभाल करने वाला, पालने वाला, पोषण करने वाले और हर चीज की देखभाल करने वाला।

·???? - कभी-कभी दावाह भी कहा जाता है। इसका अर्थ है दूसरों को इस्लाम में बुलाना या आमंत्रित करना।

·????????????? - ईश्वर की इच्छा, अगर ईश्वर ने चाहा। यह एक अनुस्मारक और स्वीकृति है कि अल्लाह की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता है।

सत्य को जानना, जीवन के उद्देश्य को समझना और सदियों पुराने प्रश्न का उत्तर जानना कि मैं यहां क्यों हूं यह रोमांचक है; अपने आराम के क्षेत्र से बाहर कार्य करना रोमांचक है। इस प्रकार ये खोज करने पर पहली चीज जो आप करना चाहते हैं वह है अन्य लोगों को बताना, और कभी-कभी जीवन के सार्वभौमिक सत्यों में से एक को धुंधला करना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। कुछ लोग सोच सकते हैं कि आप पागल या बहकावे में हैं, लेकिन यह समस्या नहीं है, क्योंकि यह आपको पैगंबर मुहम्मद या पैगंबर नूह जैसी महान श्रेणी में रखता है। समस्या यह है कि जब हम लोगों को इस्लाम की सच्चाई के लिए आमंत्रित करते हैं तो हम चाहते हैं कि वे सुनें और समझें कि हम क्या कहना चाह रहे हैं। इसलिए जो व्यक्ति अपने आराम के क्षेत्र से बाहर कार्य करता है उनके लाभ के लिए हम दूसरों को सही रास्ते पर आमंत्रित करने के लिए कुछ युक्तियों पर चर्चा करेंगे।



आइए सबसे पहले हम परिभाषाओं को एक साथ समझें। क्रिया, आमंत्रण, का अर्थ दयालु, वनिम्र, या मानार्थ तरीके से उपस्थिति होने या भागीदारी का अनुरोध करना है।^[1] शरिया का शाब्दिक अर्थ है 'पानी का रास्ता,' सभी जीवन का स्रोत, इस प्रकार इस्लामी रूप से शरीयत अल्लाह के लिए सीधा रास्ता है, जो सभी जीवन का दाता और प्रवर्तक है। अल्लाह हमें बताता है:

“आप उन्हें अपने पालनहार की राह (इस्लाम) की ओर तत्त्वदर्शाति तथा सदुपदेश के साथ बुलाएं और उनसे ऐसे अंदाज में शास्त्रार्थ करें, जो उत्तम हो।...” (कुरआन 16:125)

जब भी हम किसी व्यक्ति को इस्लाम के सही रास्ते पर आमंत्रित करते हैं, हम उन्हें इस्लाम के आकर्षण और लुभाव के साथ पेश करते हैं। हमारा काम अपने ज्ञान और क्षमताओं के अनुसार संदेश को सर्वोत्तम तरीके से पहुंचाना है। संदेश की स्वीकृति या अस्वीकृति उस व्यक्ति पर निर्भर है; धर्म में कोई बाध्यता नहीं है और इसके अलावा मार्गदर्शन देने वाला अल्लाह है। हम उन्हें परिवर्तित या वापस नहीं लाते क्योंकि यह अल्लाह करता है, और केवल अल्लाह ही वास्तव में ऐसा करता है। हमारी भूमिका केवल दूसरों को उनकी यात्रा में सहायता करने या एक बीज बोने की है जो एक दिन, इंशाअल्लाह, इस्लाम के एक पेड़ के रूप में विकसित होगा।

“धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ, कृपथ से अलग हो चुका है।...” (कुरआन 2:256)

**“...उन्हें बता दो कि पूर्व और पश्चिमि सब अल्लाह के हैं। वह जसिं चाहे, सीधी राह पर लगा देता है।”
(कुरआन 2:142)**

हालांकि यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि संदेश देना और लोगों को इस्लाम में बुलाना या दावा देना, जैसा कि कई लोग इसे कहते हैं, सभी मुसलमानों पर एक दायित्व है। बेशक हम सभी से दावा के क्षेत्र में काम करने की उम्मीद नहीं की जाती है, लेकिन हमें हर समय जागरूक रहने की उम्मीद है कि हमारा व्यवहार, शब्द और कार्य, दावा है। जो लोग इस्लाम से परिचित नहीं हैं वे मुसलमानों को यह देखने के लिए देखते हैं कि यह धर्म क्या है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा, "मुझ से फैलाओ, भले ही वह एक छंद ही हो।"^[2] कुरआन भी यही संदेश दोहराता है।

“... और किसकी बात उससे अच्छी होगी, जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करे और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।” (कुरआन 41:33)

यह सब बहुत आसान लगता है ना? हम सभी अल्लाह और उसके दूत मुहम्मद से प्यार करते हैं और नसिंसेह हम आशा करते हैं कि सभी लोग एक दिन ऐसा ही करेंगे। हालांकि इस्लाम के लिए प्यार और इसके लिए जो कुछ भी आवश्यक है वह काफी नहीं है। जब कोई संदेश फैलाने की चुनौती स्वीकार करता है तो उसे तैयार रहने की जरूरत है। कीमते बढ़ने पर अब हम दुकानदार पर चिल्ला नहीं सकते हैं। जब कोई हमारे पास से गुजरते हुए हमारा अपमान करता है तो हम क्रोध से प्रतिक्रिया नहीं कर सकते। इस्लाम का संदेश देने वाले व्यक्ति को अपमान स्वीकार करने, धैर्य रखने, बलदान देने और उन वचारों और वचारधारों को सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए जो इस्लाम की सच्चाई से दूर हैं। पैगंबर मुहम्मद ने कहा है कि, "जो लोगों के साथ घुलमलि जाता है और उनके अपमान को धैर्य के साथ सहन करता है, वह उस व्यक्ति से बेहतर है जो लोगों के साथ घुलमलि नहीं जाता है या अपने अपमान को धैर्य के साथ सहन नहीं करता है।"^[3]

जो कोई भी मुस्लिम है वह जब भी लोगो से मलिता है या अवशिवासियों के साथ मलिता है तो वो संदेश देता है, इसलिए हमारे शब्द हमेशा दयालु और कोमल होने चाहिए, और हमारा स्वभाव पूरी तरह से नियंत्रण में होना चाहिए ताकि ठोस शब्द हमारे मुंह से कभी न निकले। पैगंबर मुहम्मद के साथियों में से एक ने कहा, "हम लोगों को देख के मुस्कराते हैं, भले ही अपने दिल में हम उनके शब्दों या व्यवहार को कोस रहे हों।"^[4] इसके अलावा एक मुसलमान दूसरों के लिए चीजों को आसान बनाता है। अल्लाह यही उम्मीद करता है और पैगंबर मुहम्मद ने प्रोत्साहित किया जब उन्होंने कहा, "सखिओ और चीजों को आसान बनाओ, उन्हें मुश्किल मत बनाओ। यदि तुम में से कोई क्रोधित हो जाए, तो वो चुप रहे।"^[5]

“... अल्लाह तुम्हारे लिए सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता ...” (कुरआन 2:185)

पैगंबर मुहम्मद ने मानवीय कमजोरियों को समझा और साथ ही उत्कृष्टता के लिए मानवीय क्षमता को भी समझा। उनके दावा का तरीका एकदम सही था; हमें केवल उनके उदाहरण का अनुसरण करना है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम संदेश को दूर-दूर तक पहुंचाने के अपने दायित्व को पूरा करें।

उन्होंने हमेशा अपने और दूसरों के लिए आसान विकल्प चुना। हालांकि उन्होंने यह सुनिश्चिता किया कि आसान विकल्प शरिया के अनुसार है।

अगले पाठ में हम संदेश को फैलाने के तरीकों पर और अधिक चर्चा करेंगे।

फुटनोट:

[1] <http://dictionary.reference.com>

[2] ????? ??-???????

[3] इबदि

[4] इबदि

[5] इबदि

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/272>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।